

पैस में पच्चीस साल बीत गये थे। चित्रकला को समझने के लिये, चित्र बनाने में बहुत समय लगा। कुछ सफलता भी मिली, पर मैं सन्तुष्ट न था। चित्रों में कुछ कमी लगती थी। हाँ, रेखाओं को, रंगों को, रूप को उभरते देखा, इनका महत्व ठीक से समझा, पर लगा कि देश की महान सांस्कृति को, विदेश में, भूल रहा था। वैसे तो, मैंने देश से सदैव गहरा सम्बन्ध बनाए रखा था, अपनी भाषा नहीं भूला, पर लगा कि अब फिर से देखने, सोचने, समझने की जरूरत है। भाग्यवश, उसी समय देश का निमंत्रण मिला, १९७८ में। यह था पत्र - अशोक वानपेयी जी का, जो उस समय मध्य प्रदेश कला परिषद के प्रमुख थे और भोपाल में, मध्य प्रदेश शासन के सांस्कृतिक विभाग के सचिव थे। मानिये, मुझे हादिसि किसी हुई। मैंने लिये यह देवकृपा ही थी। उन्होंने मुझे बुलाया - भोपाल - चित्रों के साथ "उत्सव" - मिलन, जागृति, सुख, आनन्द के लिये मध्य प्रदेश में ही - जहाँ मैं जन्मा और जहाँ मेरा बचपन और युवावस्था बीती।

मैं लुन्त ही आया। हम अपने पुराने मित्रों से मिले। नये कलाकारों से भी पहचान हुई। संगीत, नृत्य, गायन, कविता, कला हर ओर थी। लैरवक, कवि अपनी कविताएँ सुनाते - चित्रों के बीच - मैं पहली बार डागर बन्धु से मिला, इनका शक्तिशाली स्वर सुना। साथ ही थे स्वामी नाथन, सचु सैना, प्रयाग कुंज, मृणाल पांडे, अविमेश और भी कई युवा चित्रकार जिनसे मिला, चित्र देखे। मैंने धरती को नमस्कार किया, भीम बेटका बापा, हरे श्वेत और सुन्दर पहाड़ियों को देखकर लगा कि किन्हीं सम्भावनाएँ हैं देश में, हमें इसे समझना है और अपनी सारी शक्तियों से आधुनिक भारत की सांस्कृति को और भी आगे बढ़ाना है।

बहुत सुख से मैं गया नरसिंह पुर, कर्किया, बवरीया, मंडला, कमेह।

गांवों में, मंदिरों में, पहाड़ों में, जंगलों में। यों से अशोक के शब्दों में कहा - "औं, लौटकर जब आऊंगा, स्या लौऊंगा - यात्रा के बाद की ध्यान -।"

इस यात्रा में, नई शक्तियां मिलीं, नये विचार आये, भारतीय शिल्प, कला का द्वि-से अर्द्धन किया। प्रश्न था - इन्हे अपने चित्रों में - किस प्रकार से ला सकें कि फ्रांस में ज्वाले चित्रों में अन्तः ज्योति अन्तर, भारतीय ही रहे। हां हमे बीसवीं शताब्दी में यूरोप से, इसास, बहुत कुछ लेना है, यह स्वभाविक है। पर हमें अपनी परम्परा, अपने मूल-श्रुतियों को भूलना नहीं है। मैं उन्ही केन्द्रों की ओर गया जो महत्वपूर्ण लगे, हिन्दी पुस्तकें, भगवत गीता, आचार्य विनोबा भावे, सन्त ज्ञानेश्वर, महात्मा गांधी, हिन्दी कविताएँ सब कुछ लेका फिरोता।

अशोक को भी पैसि बुलाया, फ्रि शोरविकों - दक्षिण फ्रांस में बेटा सा गांव महाद्वय हा साल तीन चार माह रहेंगे। यों अविन्यो फ्रेड्रिकल में भी विशेष रूप से आगन्तित किये गये। इनकी कविताएँ, भारतीय संगीत नृत्य, - प्रेरणा श्रीमाली - आठ दस दिन का भारतीय समारोह। सैंकड़ों लोग आये। आज फ्रान्स में भी भारतीय संस्कृति पुष्प भागी जा रही है। अशोक की कविताओं का अनुवाद - मास्को, वॉलेन्ड, लन्दन, पैसि में भी किया जा रहा है। इसी अन्तर्गत चित्र फ्रा भी अपने चित्र प्रदर्शित कर रहे हैं। आवश्यकता है, अलमल कठोर अथ और कार्य-सिक्क, एकाग्रता की।

मोपल में ही पहला महत्वपूर्ण आधुनिक कला प्रेक्ष "भारत भवन" अशोक की कल्पना और विचारों से बना। चार्ले कोरिया ने इसे बहुत छंद रूप दिया आशा है कि इस भविष्य में - एक नया केन्द्र बना सकेगा - दिल्ली के पास ही - जिसे अशोक, आविलेश, मनीष और अन्य सब का सहयोग अनिवार्य है।

आज, हमारे "उज्जैन महोत्सव" के लिये - ऐसी दार्ढ्य श्रमकायाएँ -